IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय कला में पशु-पक्षियों का प्रतीकात्मक स्वरूप- एक अध्ययन

शालू सोनी (शोधार्थी)

ललितकला एवं प्रदर्शनकारी कला विभाग , डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर म. प्र.

श्री आकाश मालवीय (असिस्टेंट प्रोफेसर)

ललितकला एवं प्रदर्शनकारी कला विभाग , डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर म. प्र.

संदर्भ- जिस प्रकार मनुष्य की सभी इंद्रियों में नेत्रों को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है उसी प्रकार कला में प्रतीक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। दृश्य अनुभूति ज्ञान का प्रमुख आधार है। प्रतीकों के माध्यम से कलाकृति के गूढ़ अर्थों एवं भावों की अभिव्यक्ति होती है। भारतीय कला में प्रतीकवाद का विकास प्रागैतिहासिक शैलचित्रों, आदिम ग्राफिक चिह्नों तथा प्राचीन मुद्राओं और मुहरों से हुआ है। भारतीय प्रतीक परंपरा किसी एक निश्चित सिद्धांत तक सीमित नहीं है, बल्कि समय, समाज और संस्कृति के अनुरूप निरंतर विकासशील रही है। पशु-पक्षी भारतीय संस्कृति, कला और धार्मिक संप्रदाय में अद्वितीय स्थान रखते हैं। वे मानव जीवन के विभिन्न सिद्धांत जैसे कि आध्यात्मिकता, प्रकृति से संबंध, और सांस्कृतिक प्रतीकों का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह शोध पत्र उनके महत्व का अध्ययन करता है। भारतीय धर्मग्रंथों में पशु-पक्षियों को देवताओं के वाहन, प्रतीक या मित्र के रूप में संग्रहीत किया गया है।भारतीय कला और साहित्य में ऐतिहासिकता भारतीय कला और साहित्य में पशु-पक्षियों को उनके ऐतिहासिक अर्थ के साथ चित्रित किया गया है। इस प्रकार धार्मिक प्रतीकात्मक महत्व अधिक होने के कारण इनका प्रभाव भी सार्वकालिक रहा।

शब्द कुंजी- आध्यात्मिक, सार्वकालिक, चिंह, प्रतीक आदि।

प्रस्तावना- प्राकृतिक प्रतीकों का विकास पशु, पक्षी, फूल, वृक्ष आदि के आधार पर हुआ है। पशु प्रतीकों की उत्पत्ति पशुपूजा और टोटमवाद से हुई है। देश, काल और परिस्थिति के अनुसार इनके रूप और अर्थ में अंतर देखने को मिलता है। यूरोप में पशुओं को विभिन्न श्रेणियों में विभाजित किया गया और उनके गुणों के अनुसार उनके निश्चित प्रतीक स्वीकार किए गए। असीरियन और फारसी कला में जीवन के उच्च रूपों की क्षुद्र रूपों पर विजय को बड़े जानवरों की छोटे जानवरों पर विजय के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। अंधकार पर प्रकाश की विजय को बैल पर सिंह की विजय द्वारा व्यक्त किया गया है। आमतौर पर पशुओं का प्रतीकवाद चार तत्वों (पृथ्वी, आकाश, अग्नि और जल) से संबंधित होता है। मेंढक, बत्तख, हंस और मछली जल से संबंधित होने के कारण सृष्टि के मूल रूप को व्यक्त

करते हैं। वे पुनर्जन्म के प्रतीक भी हैं क्योंकि जल कई रूप लेता है - जल, बादल, वाष्प और बर्फ आदि। सरीसृपों को पृथ्वी से, पक्षियों को आकाश से और स्तनधारियों को उनके गर्म रक्त के कारण अग्नि से संबंधित माना गया है। पशुओं की वास्तविक आकृतियों के बजाय काल्पनिक आकृतियाँ विशेष रूप से प्रभावी साबित हुई हैं। इनमें चिनलिन, किमिरा, स्फिंक्स, सायरन, यूनिकॉर्न, पंखों वाला घोड़ा, ग्रिफिन और ड्रैगन प्रमुख हैं। कुछ जानवरों में रहस्यमयी शक्तियां मानी जाती हैं।

प्रमुख पशु पक्षियों का कालानुरूप प्रतीकात्मक महत्व

प्रागैतिहासिक काल में पशु-पक्षियों का चित्रण केवल प्राकृतिक जीवन से संबंधित नहीं था, बल्कि उनका गूढात्मक प्रतीकात्मक महत्व भी है। भीमबेटका, आदमगढ़ तथा अन्य शैलाश्रयों के शैलचित्रों में बैल, हिरण, बाघ, हाथी, जंगली भैंस और पक्षियों का अंकन प्रमुख रूप से प्राप्त होता है। ये चित्र शक्ति, साहस, उर्वरता, समृद्धि, शिकार, जीविका तथा प्रकृति के साथ-साथ मानव के भी घनिष्ठ प्रतीक माने जाते हैं। इन प्रतीकों के माध्यम से आदिम मानव ने अपनी धार्मिक आस्थाओं, सामूहिक जीवन और प्रकृति के प्रति सम्मान को व्यक्त किया है। यह प्रतीक आगे चलकर भारतीय कला एवं संस्कृति में प्रतीकवाद की आधारशिला बने। (चित्र क्रमांक 1)

चित्र क्रमांक 1

सिंधु घाटी सभ्यता में पशु-पक्षियों का अंकन मुहरों, मृद्भांडों तथा मृणमूर्तियों पर प्रमुख रूप से देखने को मिलता है। वृषभ (बैल), एक-सींग वाला पशु/एक श्रृंगी बैल, हाथी, गैंडा, बाघ, भैंसा, चीता, हिरन आदि। विभिन्न पक्षियों को शक्ति, समृद्धि, उर्वरता, संरक्षण और धार्मिक आस्था के प्रतीक के रूप में अंकन किया गया है। सिंधु घाटी सभ्यता की मुहरों एवं मृणमूर्तियों में वृषभ का अंकन प्रमुख है। बड़े कूबड़/कुकुदयुक्त, सुदृढ़ शरीर और विशाल सींगों वाले बैल शक्ति, समृद्धि तथा कृषि-प्रधान जीवन के प्रतीक थे। इस सभ्यता में बड़े तथा छोटे सींगों वाले दो प्रकार की बैलों का चित्रण मिलता है, जो उस समय के विकसित पशुपालन और कृषि प्रधानता को दर्शाता है। वृषभ का अंकन, महान शक्ति और शौर्य को भी प्रदर्शित करता है।(चित्र क्रमांक 2)

(चित्र क्रमांक 2)

वैदिक काल में हंसशयेन, वृषभ, गिद्ध, नंदी ,शेषनाग, वृषभ धेनु(गाय बैल का जोड़ा) ,वराह, महिष ऐरावत हाथी (इंद्र का श्वेत हाथी) आदि।

वैदिक काल में पशु-पक्षियों को केवल जीव-जंतुओं को धार्मिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक प्रतीकों के रूप में देखा जाता था। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद में अनेक पशु-पक्षियों का उल्लेख उनके विशिष्ट गुणों एवं दैवीय महत्व के साथ देखने को मिलता है। गाय को समृद्धि, पोषण और पवित्रता, अश्व को शक्ति, गति एवं विजय, वृषभ को बल, परिश्रम एवं उर्वरता, तथा सिंह को साहस और पराक्रम का प्रतीक माना जाता है। पक्षियों में हंस ज्ञान, विवेक और पवित्रता, गरुड़ दैवी शक्ति एवं संरक्षण, तथा श्येन तेज, साहस और उच्च आकांक्षा के प्रतीक है। इस प्रकार वैदिक साहित्य में पशु-पक्षियों के माध्यम से प्रतीक प्रकृति, धर्म, संस्कृति और मानव जीवन के आदर्शों को अभिव्यक्त करते है।

जैन धर्म में प्रमुख जैन तीर्थंकर और उनके प्रतीक चिन्ह निम्न है- जैसे ऋषभदेव(प्रथम) का प्रतीक चिन्ह सांड, अजितनाथ(द्वितीय) का चिन्ह हाथी, संभवनाथ(तृतीय) का घोड़ा, संपार्शवनाथ(सप्तम) का स्वास्तिक, शांतिनाथ(सोलहवें) का हिरण है,अरनाथ(अठारहवें) का मीन, नेमीनाथ(इक्कीसवीं) का नीलकमल, अरिष्टनेमि(बाईसवें) का शंख, पार्श्वनाथ(तेइसवां) का सर्प व महावीर(चौबीसवें) का प्रतीक चिन्ह सिंह है।

बौद्ध धर्म में प्रतीकों का विशेष स्थान है। भगवान बुद्ध के जीवन की प्रमुख घटनाओं को प्रत्यक्ष रूप में न दर्शाकर विभिन्न प्रतीकों के माध्यम से दर्शाया जाता है। बुद्ध के जन्म का प्रतीक कमल तथा सांड (वृषभ), गृहत्याग का प्रतीक घोड़ा (कन्थक), ज्ञान प्राप्ति का प्रतीक पीपल का वृक्ष (बोधिवृक्ष), धर्मचक्र प्रवर्तन का प्रतीक धर्मचक्र, निर्वाण का प्रतीक बुद्ध के पदचिह्न, तथा महापरिनिर्वाण (मृत्यु) का प्रतीक स्तूप माना जाता है इन घटनाओं को आगे भी इन्ही प्रतीकों के रूप में अंकित किया गया है। यह प्रतीक बौद्ध धर्म के दार्शनिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों को प्रदर्शित करते हैं।

मौर्यकालीन कला का उत्कृष्ट उदाहरण सारनाथ का अशोक स्तंभ/सारनाथ स्तंभ/नेशनल एमब्लम है। इसके शीर्ष भाग की चौकी पर चार धर्मचक्र तथा उनके मध्य चार पशु—घोड़ा, हाथी, सिंह और वृषभ (बैल) अंकित किये गये हैं। यह पशु चारों दिशाओं की ओर गतिशील मुद्रा में प्रदर्शित करते हैं। भारतीय परंपरा में इन्हें शक्ति, साहस, समृद्धि, संरक्षण तथा चारों दिशाओं के प्रतीक के रूप माना गया है। सारनाथ स्तंभ पर इनका अंकन मौर्यकालीन मूर्तिकला की उत्कृष्टता और भारतीय प्रतीकात्मक परंपरा को दर्शाता है। इसके अतिरिक्त मौर्यकालीन स्तंभों पर पशु-आकृतियों का अंकन व्यापक रूप से देखने को मिलता है। लौरिया-नंदनगढ़ स्तंभ पर सिंह की प्रतिमा, लौरिया-अरेराज स्तंभ पर वृषभ (बैल) की प्रतिमा, रामपुरवा स्तंभ पर वृषभ शीर्ष तथा संकिसा (संकाश्य) स्तंभ पर हाथी की प्रतिमा प्राप्त हुई है। यह सभी पशु-प्रतिमाएँ तत्कालीन कला का कौशल, राजसत्ता, धर्म तथा भारतीय प्रतीकात्मक परंपरा की समृद्ध अभिव्यक्त करती हैं।(चित्र क्रमांक-३)

गज- चातुर्य,विचारशीलता तथा ऐश्वर्य का प्रतीक है।

सिंह - शौर्य, निर्भीकता, और स्फूर्ति का ।

वृषभ - भूमि की उर्वरता का।

अश्व - राज्य के विस्तार का ।

(चित्र क्रमांक-३)

शुंगकाल में बौद्ध एवं जैन कला का उल्लेखनीय विकास हुआ। प्रारंभिक बौद्ध कला में भगवान बुद्ध का प्रत्यक्ष मानवीय रूप नहीं दर्शाया गया, बल्कि उनके जीवन एवं उपदेशों को विभिन्न प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त किया गया है। इन प्रतीकों के साथ अनेक पशु-पक्षियों का अंकन भी देखने को मिलता है। भरहुत स्तूप की मूर्तिकला में सिंह धर्म और राजसत्ता, हाथी बुद्ध के जन्म एवं मानसिक शक्ति, घोड़ा महाभिनिष्क्रमण (गृहत्याग), वृषभ (बैल) बल एवं स्थिरता, हिरण सारनाथ के मृगदाव में प्रथम उपदेश तथा हंस पवित्रता और विवेक का प्रतीक माना गया है। जातक कथाओं में बंदर, हाथी, हिरण, सिंह, मोर तथा अन्य पशु-पक्षियों को करुणा के प्रतीकों के रूप में अंकित किया गया है।

जैन कला में भी प्रतीकों का विशेष महत्व था। प्रत्येक तीर्थंकर का एक विशिष्ट लांछन (प्रतीक) निर्धारित किया गया, जिनमें अनेक पशु-पक्षी सम्मिलित जिन्हें जैन प्रतीकों में देखा हैं। ये लांछन तीर्थंकरों की पहचान के साथ-साथ उनके आध्यात्मिक गुणों को भी प्रकट करते हैं।(चित्र क्रमांक 4)

(चित्र क्रमांक 4)

कुषाणकाल में मथुरा एवं गांधार कला में पशु-पक्षियों का यथार्थवादी अंकन देखने को मिलता है। सिंह, हाथी, घोड़ा, मकर, गरुड़ और हंस जैसे प्रमुख प्रतीकों का अंकन प्राप्त होता है, जो राजसत्ता, वीरता, धार्मिक आस्था तथा सांस्कृतिक समृद्धि का व्यक्त करते हैं। इनका अंकन मूर्तिकला एवं सिक्कों पर व्यापक रूप से देखने को मिलता है।

गुप्तकाल में पशु-पक्षियों का चित्रण धार्मिक एवं आध्यात्मिक प्रतीकवाद से युक्त है। गरुड़ विष्णु, हंस ज्ञान एवं विवेक, सिंह शक्ति, मोर सौंदर्य तथा नंदी (वृषभ) शिव-भक्ति के प्रतीक माने जाते हैं। इनका अंकन गुप्तकालीन मंदिरों, मूर्तियों एवं सिक्कों में प्रमुखता से देखने को मिलता है।

मध्यकालीन चित्रकला, मंदिर स्थापत्य तथा लोकचित्रों में पशु-पक्षियों का व्यापक प्रयोग हुआ। मुगलकालीन चित्रकला में पक्षियों को प्रेम, स्वतंत्रता और वैभव के प्रतीक के रूप में चित्रित किया गया है। आधुनिक भारतीय कलाकारों तथा डिजाइनरों ने भी पशु-पक्षियों को सांस्कृतिक पहचान, पर्यावरण संरक्षण तथा राष्ट्रीय चेतना के प्रतीक के रूप में दर्शाया है।

भारतीय लोकचित्रकलाओं में पशु-पक्षियों का प्रयोग की बात की जाए तो गोंड चित्रकला में हिरण, मछली, पक्षी और बाघ प्रकृति एवं जीवन-संतुलन के प्रतीक माने जाते हैं। मधुबनी चित्रकला में मछली, मोर, हाथी, कछुआ और तोता शुभता, उर्वरता एवं समृद्धि को व्यक्त करते हैं। वारली चित्रकला में पशु-पक्षी मानव और प्रकृति के सह-अस्तित्व को प्रदर्शित करते हैं, जबकि पिथौरा चित्रकला में घोड़ा, हाथी और बैल देवत्व एवं समृद्धि के प्रतीक हैं। इसी प्रकार मालवा, बुंदेलखंड, निमाड़ एवं बघेलखंड की लोकचित्रकलाओं में मोर, गाय, बैल, हाथी, घोड़ा और तोता स्थानीय संस्कृति, कृषि, पर्व-त्योहार तथा धार्मिक आस्था के प्रतीक माने जाते हैं।

प्रमुख पशु-पक्षियों की प्रतीकात्मक समीक्षा

पशुयों से सम्बंधित प्रतीकात्मकता

यूनिकार्न- यूनानी साहित्य में वर्णित एक भारतीय पशु यूनिकॉर्न है जो आकार में घोड़े जैसा था और इसके सिर पर एक सीधा सींग था। इसे सिंधु संस्कृति की मुहरों पर उकेरा गया है।

हाथी- यह राज्य सत्ता का प्रतीक भी रहा है। हाथियों की जलक्रीड़ाएँ प्रसिद्ध हैं तथा इसकी तुलना वीर पुरुषों की जलक्रीड़ाओं से की जाती है। बादलों और वीर पुरुषों की गर्जना, वीरों का द्वन्द्व तथा आनन्दपूर्ण चाल की तुलना हाथी से की जाती है। हाथी सभी देशों में नहीं पाया जाता, इसलिए इसका चित्रण केवल कुछ ही सभ्यताओं में हुआ है। हाथी का चित्रण भारतीय साहित्य और कला में बहुत प्राचीन काल से मिलता है। वैदिक देवता इंद्र का वाहन हाथी है। बौद्ध साहित्य में सफेद हाथी 'बुद्ध-सत्व' तथा 'अलौकिक' का प्रतीक है।

गाय- भारतीय संस्कृति में गाय को 'गौ माता' माना जाता है। यह मातृत्व, पोषण, करुणा तथा समृद्धि का प्रतिनिधित्व करती है। लोकचित्रों में गाय शुभता और पारिवारिक सुख को व्यक्त करने के लिए बनायीं जाती है।

सिंह- सिंह साहस, वीरता, न्याय व सत्ता का प्रतीक है। भारत के राष्ट्रीय प्रतीक अशोक स्तंभ में सिंह इसी गौरव का प्रतिनिधित्व करता है।

घोड़ा- घोड़ा गति, ऊर्जा, युद्धकौशल और प्रगति का प्रतिनिधित्व करता है। लोकचित्रों में यह सफलता और विजय को व्यक्त करता है।

बैल- बैल कृषि, श्रम, धैर्य व समृद्धि का प्रतीक है। ग्रामीण जीवन और लोककला में इसका विशेष रूप से महत्व है।

हिरण- हिरण को कोमलता, शांति, सौंदर्य व आध्यात्मिक चेतना का प्रतीक माना जाता है।

सर्प- सर्प रहस्य, शक्ति, पुनर्जन्म तथा ऊर्जा का प्रतीक है। भारतीय दर्शन में इसे कुंडलिनी शक्ति से भी जोड़ा जाता है।

मछली- मछली उर्वरता, जीवन, जल और शुभता का प्रतीक है। मत्स्यावतार के कारण इसका धार्मिक महत्व भी है।

पक्षियों से सम्बंधित प्रतीकात्मकता

गरूड़- पक्षियों में गरुड़ एक बहुत ही प्राचीन प्रतीक है। भारत में यह भगवान विष्णु का वाहन है और साँपों का शत्रु है। यह सूर्य और आध्यात्मिकता का प्रतीक है। मिस्र की कला में इसका अर्थ जीवन, जन्म और दिन की गर्मी है। इसे दिन उतना ही पसंद है जितना उल्लू को रात। यह पिता का प्रतीक भी है। इसमें वीरता, महानता आदि गुणों की भी कल्पना की गई है। इसे शक्ति और युद्ध के देवताओं से जोड़ा गया है। वैदिक भावनाओं के अनुसार यह एक संदेशवाहक भी है। सीरिया में यह सूर्य पूजा का प्रतीक है। ईसाई कला में यह स्वर्ग तक संदेश पहुँचाता है। अपनी तेज़ गति के कारण यह दैवीय शक्ति का भी प्रतीक है। रोमन कला में यह राज्य शक्ति का प्रतीक है।

तोता - भारतीय प्रेम कथाओं में तोते को दर्शाया गया है। यह कामदेव का वाहन है और इसलिए प्रेम का प्रतीक है। रहस्यवादी साधना में यह गुरु का प्रतीक भी है। भारतीय साहित्य, मूर्तिकला और चित्रकला में तोते की क्रीड़ा की कई कहानियाँ हैं।

मोर- मोर सुंदरता का प्रतीक और सरस्वती का वाहन है। भारत और ईरान में सजावट के लिए इसका बहुतायत में उपयोग किया जाता रहा है। बीजान्टिन ईसाई कला में भी इसका चित्रण किया गया है। ऐसा माना जाता है कि मोर का मांस कभी खराब नहीं होता, इसलिए ईसाइयों ने इसे पापरहित आत्मा और अमरता का प्रतीक माना है। रोमन सिक्कों पर यह राजकुमारियों के गौरव के प्रतीक के रूप में आया है। मध्यकालीन जर्मन कलाकार बॉश की कृतियों में मोर की पूंछ को सभी रंगों के समन्वय और पूर्णता के प्रतीक के रूप में दर्शाया गया है। मोर का जोड़ा द्वैत को व्यक्त करता है। ज्योतिष में इसे संध्या का प्रतीक माना जाता है। भारतीय पौराणिक भावना ने इसे हजारों तारों वाले अंतरिक्ष का प्रतीक माना है। वर्तमान युग में यह भारत का राष्ट्रीय पक्षी है। राजपूत शैली के चित्रों में अनुपस्थित या व्याकुल प्रेमी के प्रतीक के रूप में भी इसका चित्रण मिलता है। श्री कृष्ण के चित्रों में मोर पंख का चित्रण आवश्यक रूप से किया गया है। वहां यह संभवतः 'घनश्याम' के प्रेमी-भक्त का प्रतीक है, जिसे इतना सम्मान दिया गया है।

हंस - हंस को दूध और पानी में अंतर करने वाला माना जाता है। यह ज्ञान की पवित्रता का प्रतीक है और ब्रह्मा और सरस्वती का वाहन है। भारतीय कला में इसका भरपूर चित्रण हुआ है। स्त्री की पायल की ध्वनि की तुलना हंस की ध्वनि से की जाती है। प्रेम संबंधों में यह किसी दूत या नायक का प्रतीक है या दूत बनकर आया है। भारतीय कला में अनेक स्थानों पर कमल खाते हुए हंसों का चित्रण किया गया है। अपने सफेद रंग के कारण हंस आत्मा की पवित्रता का भी प्रतीक है। अपनी स्वाभाविक उड़ान के कारण हंस ऊर्ध्व गति का भी प्रतीक है। हंस की तुलना नायिका की धीमी गति से भी की जाती है। यूरोप में इसे संगीत के देवता अपोलो से जोड़ा गया है। लाल हंस सूर्य का प्रतीक है। इसे सौंदर्य की देवी शुक्र से भी जोड़ा गया है, इसलिए इसे बिना कपड़ो वाली लड़की का मनोवैज्ञानिक प्रतीक माना जाता है, लेकिन इसके साथ पवित्रता भी जुड़ी हुई है। मनोवैज्ञानिकों की दृष्टि से हंस पवित्रता का प्रतीक है।

कबूतर कबूतर शांति का प्रतीक है। यह संदेशवाहक भी है। कबूतर जोड़े को प्रेम का प्रतीक बनाया गया है और प्रेम संबंधों में दर्शाया गया है।

कौआ- अपने रंग के कारण कौआ सृष्टि की शुरुआत, अंधकार, उपजाऊ भूमि आदि का प्रतीक है। भारत में यह अग्नि का ध्वज प्रतीक है।

उपसंहार- पशु-पक्षियों का उल्लेख भारतीय समाज, संस्कृति और धार्मिक मान्यताओं में गहराई से निहित है। प्रतीकों की मूल भूमिका केवल आध्यात्मिक और सांस्कृतिक प्रतीकों तक ही सीमित नहीं है। आधुनिक युग में इन प्रतीकों का उपयोग समाज में जागरूकता एवं शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए भी किया जा रहा है। विभिन्न राज्यों, सरकारी संस्थानों, ब्रांडो के लोगो में, शुभंकर के रूप में पशु-पक्षी से संबंधित प्रतीकों का प्रयोग किया जा रहा है। उदाहरणस्वरुप WWF (वर्ल्ड वाइड फंडामेंट फॉर नेचर) ने पांडा को अपने प्रतीक के रूप में चुना है। भारतीय मुद्रा पर अंकित पशु-पक्षी राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक हैं। पशु पक्षियों का धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक दृष्टि से तो विशेष प्रतीकात्मक महत्व है

ही इसके साथ पशु-पक्षी प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस सन्दर्भ में उल्लेखित है कि जीव-जंतु, पशु- पक्षी मानव जीवन के लिए अनिवार्य हैं। जिनका प्रभाव सार्वकालिक है। पशु-पक्षियों का विवरण न केवल प्रतीकात्मक दृष्टि से बल्कि जैव विविधता को इंगित करने और दार्शनिक संदर्भ में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

संदर्भ सूची

1.पाण्डेय, प. (2001), प्राचीन भारतीय कला में प्रतीक, दिल्ली: शारदा पब्लिशिंग हाउस।

2.अग्रवाल, गि. कि. (अशोक),1971, कला-निबंध,आगरा: संजय पब्लिकेशन्स।

3.अग्रवाला, वी.एस. (2022), भारतीय कला. पृथ्वी प्रकाशन।

4.गोम्ब्रिच, ई. एच. (1995), द स्टोरी ऑफ आर्ट (16वाँ संस्करण). फाइडन प्रेस।

5. सिरलॉट, जे. ई. (2002), ए डिक्शनरी ऑफ सिंबॉल्स (द्वितीय संस्करण, जे. सेज, अनुवादक). डोवर पब्लिकेशन्स।

6.युंग, सी. जी. (1964), मैन एंड हिज़ सिंबॉल्स. डेल पब्लिशिंग।

7. ज़िमर, हेनरिख आर. (1946). मिथ्स एंड सिंबॉल्स इन इंडियन आर्ट एंड सिविलाइज़ेशन(जे.कैंपबेल,संपादक). पैंथियन बुक्स।

8. कुमारस्वामी, आनंद के. (2003), द डांस ऑफ शिवा- फोर्टीन इंडियन एसेज़. डोवर पब्लिकेशन्स। (मूल कृति 1918 में प्रकाशित)।

9. वत्स्यायन, कपिला. (1997),क्लासिकल इंडियन डांस इन लिटरेचर एंड द आर्ट्स. संगीत नाटक अकादमी।

10. मिशेल, जॉर्ज. (1988). द हिन्दू टेम्पल- एन इंट्रोडक्शन टू इट्स मीनिंग एंड फॉर्म्स. यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस।

11. फर्ग्यूसन, जॉर्ज. (1961), साइन्स एंड सिंबॉल्स इन क्रिश्चियन आर्ट. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

12. एल्किन्स, जेम्स. (2007), विज़ुअल स्टडीज़: ए स्केप्टिकल इंट्रोडक्शन, रूटलेज।

13. पैनोफ्स्की, एर्विन. (1955), मीनिंग इन द विज़ुअल आर्ट्स. डबलडे एंकर बुक्स।